JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Hkkjr jRu MkO lर्वपल्ली राधाकृष्णन का शैक्षणिक ;kxnku

MkO foHkk Hkkj}kt]
ikpk;k]
vk;l dU;k ¼ih0 th0½ dkfyt] gkiqM+

सारांश

वर्तमान शोधपत्र में डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन का शैक्षणिक योगदान का विश्लेषण किया गया है। डॉ0 राधाकृष्णन महान शिक्षाविद् थे तथा उन्हें अपने जीवनकाल में Hkkjr के सर्वोच्च पदक भारत रत्न से अंलकृत किया गया था। डॉ0 राधाकृष्णन ने भारत के राष्ट्रपति पद को भी साधारण पुरूष की तरह सुशोभित किया। डॉ0 राधाकृष्णन शिक्षा के सर्वश्रेष्ठ व्याख्याकार थे। शिक्षा को जीवन में आवश्यक माना गया है। शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं विकास के लिए सर्वोत्तम माना गया है। डॉ0 राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षा की उपयोगिता व्यक्ति एवं समाज दोंनो के ही सन्दर्भ esa है। व्यक्ति के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हुए उनका विचार था कि शिक्षा से मनुष्य dks ek{k ikIr gksrk gSA

मूल शब्द :– भारत रत्न, शैक्षणिक योगदान, सर्वश्रेष्ठ व्याख्याकार।

iLrkouk

Mk0 राधाकृष्णन व्यक्ति की रचना esa nSfgd rRoksa dh rqyuk esa vk/;kfRed rRoksa को अधिक महत्व देते थे। उनके अनुसार भौतिक सफलता, शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य नहीं है। अपितु शिक्षा का लक्ष्य हमें यह जानने में सहायता देना है कि विश्व में हमारे thou dk lkj D;k gS\ राधाकृष्णन के अनुसार जीवन में वास्rfod सुख और शान्ति आध्यात्मिक विकास से ही सम्भव है। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य आध्यात्मिक विकास होना चाहिए। राधाकृष्णन चारित्रिक उन्मया को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य मानते थे। शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्रवाद की भावना का विकास करना है। राष्ट्रवाद की भावना राष्ट्र की एकता अखंडता और विकास के लिए अति आवश्यकता है।

डॉ0 राधाकृष्णन ने पाठ्यक्रम के तीन कार्य बताये थे। पाठ्यक्रम का प्रथम कार्य औपचारिक शिक्षा देना है क्योंकि पाठ्यक्रम के द्वारा ही छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों कk Kku vkj vuHko ikIr djk;k tk ldrk gA ikB;Øe dk f}rh; dk;l turi=h; l/kkjk d: अनुकूल शिक्षा देना है। इस शिक्षा के द्वारा ही छात्रों के स्वतन्त्र fopkj] foopuk vkj jpukRed dk;k d: fy, r:;kj fd;k tk ldrk g vkj ikB;Øe dk rrh; dk;l Nk=k dk mudh vfHk:fp vkj vfHk;kX;rk d: vu|lkj 0;kolायिक शिक्षा inku djuk gA उनका कहना था कि पाठयक्रम की रचना छात्रों की आवश्यकताओं और रूचियों के vu|lkj की जानी चाहिये। राधाकृष्णन एकीकृत पाठ्यक्रम का के समर्थक थे। वे विज्ञान vkj vk/;kRed e: leUo; चाहते थे। इसलिये वे तकनीकी विषयों के साथ–साथ मानवीय विषयों का भी महत्व देते थे। डॉ0 राधाकृष्णन ने पाठ्यक्रम में मानविकी, साहित्य, काव्य दर्शन, इतिहास, भूगोल, सामाजिक विज्ञान, ललित कलाओं, विज्ञान, गणित आदि विषयों के समावेश पर बल दिया।

डॉ0 राधाकृष्णन ने शिक्षण प्रक्रिया e: Kku ikIr dju: d: fy, ftu fof/k;k dk उल्लेख किया था उनमें, अध्ययन, श्रवण, मनन, निदिध्यासन, प्रत्यक्ष, अनुमान, शास्त्र प्रमाण, वाचन, दृष्टान्त निरीक्षण, प्रयोग अभ्यास व्याख्यान vkfn ie[k gA mUgkau: cã विचार, आत्म ज्ञान तथा ईश्वर प्राप्ति एवं मुक्ति जैसे महान एवं श्रेष्ठ उद्देश्यों को ध्यku e: j[kr: g|, vाधुनिक शिक्षण विधियों से भिन्न श्रवण, मनन, निदिध्यासन जैसी शिक्षण विधियों का समर्थन किया। वे अनुवर्गत और विचार गोष्ठियों पर विशेष बल देते हु, कहते थे कि उच्च कक्षाओं में इनका प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए क्योंकि इनके द्वारा ,:lh ifjfLFkfr;k mRiUu dh tkrh g: जिनसे विद्यार्थियों में विश्लेषण, संश्लेषण vkykpukRed {kerk] eY;kdu dh ;kX;rk] fujh{k.k vkj vuHkok d: iLrfrdj.k dh n{krk dk fodkl gkrk gA

डॉ0 राधाकृष्णन ने शिक्षक को अत्यधिक उच्च और गरिमापूर्ण स्थान दिया और lekt e: mldh Hkfमिका को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना। राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षक शिक्षार्थी का मात्र पथ प्रदर्शक तथा मित्र ही नहीं होता वरन् इससे भी अधिक वह अपने शिष्य की आत्मा और उसकी प्रेरणा का अक्षय स्त्रोत होता है। इस प्रकार राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षक का कार्य अपने शिक्षाथि;k dk ckf)d fodkl djuk] pfj= dk fuekZ.k djuk] lekykpukRed चिन्ता और सृजनात्मक शक्तियों का विकास करना, जिज्ञासा वृत्ति और शोध प्रवृत्ति को विकसित करना, सांस्कृतिक विरासत का अधिग्रहण करना, मूल्यों

और आदर्शों के प्रति और आस्था उत्पन्न करना, शारीरिक vkSj ekufld LokLF; dk /;ku j[kuk] ikB;Øe lgHkkxh fØ;kvksa esa Hkkx ysus ds fy, izsfjr djuk] vfHk0;fDr ds volj iznku djuk] ikjLifjd izse vkSj lnHkko dh Hkkouk fodflr djuk rFkk राष्ट्र और समुदाय के निर्माण में योगदान nsus dh Hkkouk fodflr djuk gSA

MkW0 राधाकृष्णन ने शिक्षार्थी के कर्तव्यों का विवेचन djrs gq, dgk fd ,slk Kku dks fou;] vknj vkSj lsok के द्वारा प्राप्त करना चाहिये। शिक्षक के प्रति उसके हृदय में पूज्य भाव होना चाहिए उसका कर्तव्य है कि वह शिक्षक के पास जिज्ञासा के साथ आदर और सेवा की भावना से जाये। उसके हृदय में शिक्षक के प्रति असमी श्रद्धा होनी चाहिए। mls viuk ikB;Øe dk xgu v/;;u djuk pkfg;sA mldk izeq[k drZO; Lok/;k; करना है। उसे अपने ऊपर नियन्त्रण रखना चाहिये और आत्मानुशासन का पालन करना चाहिये। शिक्षार्थी को प्रेम, दया और ईमानदारी, आज्ञापालन, विनम्रता, क्षमा, पवित्रता] सच्चरित्रता, कर्तव्यनिष्ठा और त्याग आदि गुणों से परिपूर्ण होना चाहिये।

MkW0 राधाकृष्णन अनुशासन को एक सार्वभौमिक समस्या मानते थे। अनुशासनहीनता के लिए वे विद्यार्थियों को उत्तरदायी नहीं मापते। उनका मत था कि अच्छे अनुशासन के लिए शिक्षा संस्थाओं में विद्यार्थी स्वशासन को प्रभावशाली ढंग से लागू किया जाना pkfg;sA fo|kfFkZ;ksa dks vf/kdkf/kd vkSj mRre iqLrdsa miyC/k djk;h tkuh pkfg;sA श्रेष्ठ मूल्यों, उच्चतम आदर्शों तथा उत्तम ज्ञान वाले शिक्षक उपलब्ध होने चाहिये। इस प्रकार राधाकृष्णन ने दण्डात्मक अनुशासन का विरोध किया और प्रभावात्मक अनुशासन ij cy fn;k FkkA

धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में डॉ0 राधाकृष्णन के विचार बड़े उदात्त और स्पष्ट हैं। वे शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में थे। डॉ0 राधाकृष्णन ने शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर मौलिक एवं धार्मिक शिक्षा प्रदान करने के लिए एक व्यवस्थित :ijs[kk izLrqr dhA mUgksaus dहा कि इसके अन्तर्गत मौन चिन्तन, विश्व के महान धार्मिक नेताओं के जीवन चरित्र, सभी धर्मों के मिल सिद्धान्तों का अध्ययन और धर्म दर्शन leL;kvksa dk v/;;u lfEefyr gksuk pkfg;sA

डॉ0 राधाकृष्णन स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने स्त्रियों के उत्थान और fodkl के लिये स्त्री शिक्षा की आवश्यकता और महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यदि सामान्य शिक्षा पुरूषों अथवा स्त्रियों तक सीमित रखनी पड़े तो स्त्रियों को ही

शिक्षित किया जाना चाहिये क्योंकि उस स्थिति में शिक्षा स्वयं ही अगली पीढ़ी में पहुॅच tk;xhA o dgrs Fks fd शिक्षित, सुसंस्क1त जागरूक माताएं जा परिवार में अपने बालक ds lkFk jgrh gks vkSj dk;Z djrh gSA ckyd ds fy;s pfj= vkSj cqf) dh lokZRre शिक्षिका होती है।

डॉ0 राधाकृष्णन ने विश्वविद्यालयों को ज्ञान का मन्दिर कहा था कि जिनका उद्देश्य Kku dh T;kfr dks iTtofyr djना है। उसके अनुसार विश्वविद्यालय किसी भी राष्ट्रकी सबसे पवित्र और सबसे उच्च सामाजिक संस्थाएं है क्योंकि यही पर भविष्य के सर्वोच्च नागरिकों का निर्माण होता है। यही वे संस्थान है जो किसी राष्ट्र की प्रxfr iFk ij vxzlj djrs gSA vr% budk }kjk ,sls urRo dk fuekZ.k fd;k tkuk pkfg;s tk दूरदर्शी बुद्धिमान, बौद्धिक और साहसी हो। अध्यापक, छात्र और उनके द्वारा अध्ययन अध्यापन ही विश्वविद्यालय की आत्मा है। डॉ0 राधाकृष्णन विश्वविद्यालय की स्वायत्तता के dVVj leFkZd FksA

शैक्षणिक योगदान

डॉ0 राधाकृष्णन एक महान लेखक थे। उनकी सृजनkRed ys[kuh ls vudks महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रणयन हुआ। राधाकृष्णन के रचना संसार के आधार पर यह ifjyf{kr gksrk gS fd mudk 0;fDrRo fo)rkiw.kZ xEHkhj rFkk vkstLoh vkSj dfrRo महान प्ररेणादयी है। उनकी गहन पाण्डित्यपूर्ण कृतियाँ राष्ट्र की महान धरोहर हैं।

दर्शन की पृष्ठभूमि

fdlh शिक्षा दार्शनिक या शिक्षा शास्त्री का शिक्षा दर्शन उसके जीवन दर्शन का परिणाम होता है और जीवन दर्शन उस पर्यावरण और उन परिस्थितियों का परिणाम gksrk gSA ftuesa og tUe ysrk gS] thrk gS vkSj viuk thou 0;rhr djrk gSA vr% किसी दार्शfud के शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन करते समय उसके जीवन दर्शन, उसकी ifjfLFkfr;ksa vkSj mldk iHkkfor करने वालों का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। महान दार्शनिक और शिक्षाशास्त्री राधाकृष्णन इतिहास के ऐसे विचारक थे जिनकी पृष्ठभूमि भारतीय इतिहास के गौरवमय स्वर्ण पृष्ठों से जुड़ी हुई है। उन्होने जहाँ धर्म,

दर्शन और चिन्तन को नयी दिशा दी, वहाँ अत्यन्त उच्च कोटि के शिक्षा दिर्शन का विकास कर शिक्षा जगत को अमूल्य योगदान fn;kA

डॉ0 राधाकृष्णन का जन्म 19 वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में हुआ था। उस le; भारत पराधीन था। ब्रिटिश सत्ता के प्रति उग्र विरोध की भावना थी। हिन्दू धर्म मे अन्धविश्वास vkj dqjhfr;k dk cksyckyk FkkA Hkkjrokl h tgk ,d vkj /keZ d s ifr हीन भावना से ग्रस्त थे वहीं दूसरी ओर भारत की स्त्रियाँ अनेक कुरीतियों की शिकार FkhA bl lkbZ /keZ i pkjdk dk /;ku vfr fiNMh tkfr;k vkj vfr fiNM s vkfnokfl;k d s /keZ ifjorZu dh vkj FkkA lkFk gh fpfdRlk dgk tku s okyk Hkkjr vkfFkZd fLFkfr में अत्यन्त दयनीय दशा को प्राप्त हो रहा था। श्रमिकों का शोषण हो रहा था। भाjrh; शिक्षा का आंग्लीकरण किया जा रहा था। इन ifjfLFkfr;k e s lqjUnzukFk cutZh] राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानन्द, रामाकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि vjfoUn] jfoUnzukFk VSxkj] ,uhcslSUV, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, egkRek xka/kh vkj ifMr tवाहर लाल नेहरू जैसे ऋषियों, सन्तों, समाज सुधारकों और राष्ट्रवादियों ने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृfrd {ks=k e s पुनरूत्थान और नव जागरण का शंख फूंक कर भारतीयों को जागृत करने का अथक प्रयत्न कर रहे थे। ऐसे समय में जबकि भारत में उदासीनता और निराशा u s Hkkjrh;k को अकर्मझय बना दिया था। इन महापुरूषों ने उन्हें आत्म सम्मान दिया और उनके Hkkrdkfलक सुषुप्त गौरव को पुनः जागृत किया। डॉ0 राधाकृष्णन के जीवन दर्शन और शिक्षा दर्शन का विकास इसी पृष्ठभूमि में हुआ। उनके ऊपर पारिवारिक परिवेश के अतिरिक्त वेदों, उपनिषदों, गीता और अनेक महापुरूषों तथा विद्वानों का प्रभाव पMk राधाकृष्णन पर अपने माrk&firk vkj ifjokj dk xgjk iHkko iMkA bud s ekrk&firk /kkfeZd izofRr d s FkA o s fgUnw /keZ d s dVVj vuq;k;h FkA bud s firk lLdr dk v/;;u djr s Fk s vkj viu s iq= dk Hkh lLdr i<kuk pkgr s FkA bud s ifjokj e s शराब, अण्डा, मांस, मछली, बीड़ी, सिगरेट आfn dk iz;kx oftZr FkkA viu s ikfjokfjd lLdkjk s d s dkj.k इन्होंने धर्म ग्रन्थों, वेद पुराणों, उपनिषदों आदि का गहन अध्ययन fd;kA

डॉ0 राधाकृष्णन पर अंग्रेजी साहित्य के विख्यात शिक्षक विलियम मिलर तथा दर्शन भारत के शिक्षक विलियम स्किनर और ए0 th0 gkx dk cgqr iHkko iMkA bUgksu s राधाकृष्णन के विचारों को बनाने में काफी सहायता की और उनकी शक्ति का आभास

कराया। हॉग के विषय में उन्होंने स्वयं कहा कि– हॉग एक महान धार्मिक विचारक थे, ftUgksaus /keZ dk v/;;u cM+h xgjkbZ ls fd;kA fu%lUnsg vius ih<+h ds os lcls egku ईसाई अध्यापक थे। जो भी उनके सम्पर्क में आता था, उसके ऊपर उनका प्रभाव अवश्य iM+rk FkkA[1] gkx ls izHkkfor gksdj राधाकृष्णन ने धर्म का गहन अध्ययन किया और दर्शन शास्त्र में रूचि लेना प्रारम्भ किया। ईश्वर पर विश्वास, धर्म में आस्था और दर्शन ds v/;;u vkfn ds fy, mUgksaus gkx ls izsj.kk izkIr dhA[2] राधाकृष्णन महात्मा बुद्ध से vR;f/kd izHkkfor FksA mUgksaus dgk fd egkRek cq) ds vuqlkj ^vius nq[k ds dkj.k ge Lo;a gSa dksbZ gedks ck/; ugha djrkA*[3] 1938 में राधाकृष्णन को ब्रिटिश अकादमी esa व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया तो उन्होंने इसके लिए एक उद्दीप्त विषय का चुनाव किया और वह विषय था– xkSre cq) A os dgrs Fks fd cqf) d ,drk] uSfrd xEHkhjrk rFkk vk/;kfRed सूक्ष्म दृष्टि द्वारा विचार djus ij xkSre cq) ds O;fDrRo }kjk जीत लिया गया था। उनके अध्ययन में भारतीय दर्शन के कुछ उत्कृष्टम पक्ष बौद्ध धर्म के mlokrkoj.k ls lEc) gS ftUgsa O;fDr ds thou esa fopkj dk lk{kkr vorkj ekuk tkrा है। ब्रिटिश अकादमी में बुद्ध पर उनका व्याख्यसन gkus ls cgqr igys Hkkjrh; दर्शन का उनका प्रथम ग्रन्थ बुद्ध को निःसंकोचा श्रद्धाजंलि स्वरूप प्रस्तुत हो चुका था। बुद्ध महान अपने प्रचण्ड आत्मसंयम स्वाप्निल सादगी, सुकोमल शान्ति तथा गहन प्रेम के lkFk izkP; dh vkRek dk lnSo izfrfuf/kRo djrs gSA mUgsa vusd ukeksa ls tkuk tkrk था। शाक्यमुनि, शाक्यों का पंडित, तथागत, पर वे ही थे, जो सत्य तक पहुँचे।"[4]

ईसाई मिशनरी संस्थाओं में डॉ0 राधाकृष्णन को हिन्दू धर्म विषयक निन्दात्मक fVIif.k;ksa dk lkeuk djuk iM+k FkkA blls mUgsa cgqr nq[k gksrk Fkk vkSj cgqr {kqC/k jgk djrs FksA tSl&tSls fgUnw /keZ dh fuUnk dh tkrh FkhA oSl&oSls muds ân; esa fgUnw /keZ ds izfr J)k vkSj HkfDr dh Hkkouk cyorh gksrh tkrh FkhA blh le; Lokeh विवेकानन्द के वेदान्त दर्शन से इनका परिचय हुआ, जिसके फलस्वरूप fgUnw /keZ ds izfr इनकी निष्ठा अधिकाधिक बढ़ती गयी। इस सम्बन्ध में इन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानन्द ds vnHkqr lkgl us fgUnw /keZ ds izfr esjs mlvfHk;ku dks tkxzr fd;k ftl ij ईसाई मिशनरियों के द्वारा अब तक आघात किया जा रहा था।"[5]

राधाकृष्णन रवीन्द्रनाथ VSxksj से अत्याधिक प्रभावित थे। दोंनो ही वेदान्तिक दर्शन के निकट थे जिसमें परम सत्ता का ज्ञान मस्तिषक अथवा तर्क से नही होता था वरन् vUrKkZu vFkok vkfRed vuqHko ls gksrk FkkA[6]

राधाकृष्णन समकालीन पाश्चात्य दार्शनिकों से भी प्रभावित थे। हवाइट हैड, जनरल स्मट्स अलैक्जेन्डर, बर्गसों आदि उनके समकालीन दार्शनिकों में प्रमुख थे। जिनकी राधाकृष्णन के विचारों पर स्पष्ट छाप दिखायी देती है। राधाकृष्णन के fopkj i.oh o पाश्चात्य विचारों का मिला जुला रूप था। वे एक ही तरफ जहाँ af)rokn के दार्शनिक Fk ogk nl jh rjQ वे हींगल और ब्रेडले के प्रत्ययवाद से प्रभावित थे। शंकर दर्शन की 0;k[;k में उनके मस्तिष्क में हींगल और बेडले के प्रत्ययवाद का स्वरूप भी नहीं न कहीं अवश्य रहा है। वे अपने विचारों को प्रकट करते समय इन दार्शनिकों शंकर, हींगल, cMy d i;kl {k= e jg FkA उनका यह प्रयास रहा था कि विश्व के समस्त vk/;kReokfn;k e leUo; LFkkfir fd;k tk; vkj ble o lQy Hkh jg FkA राधाकृष्णन जैक मैरीटेन के विचारो से सहमत थे। उन्होंने मनुष्य की प्रकृति के विषय में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आलोचना की थी। उनके विचार से सबस i.uhr vu.l/kku ;g जानना है कि मनुष्य क्या है। उसे क्या होना चाहिए और उसका ध्येय क्या है\ vkj ;g जानना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असम्भव है। दर्शन और विज्ञान में मूल अन्तर यह है कि विज्ञान गौण कारणों का ज्ञान है और केवल अन्वेषण के लिए उपर्युक्त है, परन्तु दर्शनशास्त्र भारत को अन्तिम ध्येय भी होना चाहिए। राधाकृष्णन का विचार था कि मनुष्य e foodd i.k संश्लेषणात्मक ऐक्ट है, जो पशु के अन्तः प्रेरित एकता से कहीं उच्च है। ऐसे में निश्चित रूप से विज्ञान को दर्शनशास्त्र के लिए स्थान रिक्त करना होगा। अन्यथा ekuo LoHkko dk le>uk vlEHko gA[7]

i.fMr tokgj yky ug: के प्रति भी राधाकृष्णन को अपार श्रद्धा थी। महत्वपूर्ण भाषणों में वे इनको उद्‌धत करना नहीं भूलते थे। उन्होंने पंडित नेहरू के विषय में fy[kk Þekuo tkfr d ,d egku m)kjd d :i e ug: vf}rh; FkßA ,d ,l 0;fDr के रूप में जिसने अपनी सारी जीवन शक्ति राजनीतिक दासता, आर्थिक गुलामी, lkekftd neu rFkk lkLd`fr tM+rk l ykxk dh ekufld eqfDr d fy, yxk nhA[8]

निष्कर्ष

डॉ0 राधाकृष्णन ने शिक्षा शब्द का प्रयोग अत्यन्त व्यापक अर्थ में किया है। उन्होंने शिक्षा को जीवन के लिए आवश्यक माना है। वे शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, ckf)d ,o fodkl dh i.fØ;k ekurs g तथा शिक्षा को ऐसा साधन मानते थे जो व्यक्ति vkj lekt dk i.xfr देता है एवं विकास को गति प्रदान करता है। राधाकृष्णन के

अनुसार शिक्षा dh mi;kfxrk 0;fDr ,o lekt nkuk d gh lUnHk e gA 0;fDr d लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हुए उनका विचार था कि शिक्षा से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता है। अतः शिक्षा प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति का आचरण, विचार तथा व्यवहार l|lLdr gk tkr gA

उसका जीवन उत्तरोत्तर उत्कृष्टतर हो जाता है जिससे श्रेष्ठ स्थान के निर्माण को cy feyrk gA

lUnHk lwph

1& efr d0,l0 ckgjk] ,0 % 'एस0 राधाकृष्णन हिज लाइफ एण्ड vkbfM;kt* vkfj;UV iij cDl] u;h दिल्ली, 1991 पृष्ठ 12

2& efr d0,l0 ckgjk] ,0 % 'एस0 राधाकृष्णन हिज लाइफ एण्ड vkbfM;kt* vkfj;UV iij cDl] u;h fnYyh] 1991] i0 11&12

3& राधाकृष्णन, एस0 % ^uo;podk l* fgUnh vuokn lUekxl प्रकाशन, दिल्ली 1991

4& iek] uUn dekj % सर्वपल्ली राधाकृष्णन, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली 1998, पृष्ठ 44–35

5& सिंह, परमेशवर प्रसाद % Hkkjr d egku शिक्षा शास्त्री पृष्ठ 117

6& flg] jktUn iky % 'राधाकृष्णन' शिक्षाशास्त्री के रूप में एशियन पब्लिशर्स, जान्धर सिटी, 1968, पृष्ठ 19

7& flg] jktUn iky % 'राधाकृष्णन' शिक्षाशास्त्री के रूप में एशियन पब्लिशर्स, जान्धर सिटी, 1968, पृष्ठ 36

8& iek] uUn dekj % सर्वपल्ली राधाकृष्णन, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली 1998, पृष्ठ 28